पञ्चाङ्ग एक परिचय

चतुरंगबलो राजाजगतीं वशमानयेत् ।
अहं पंचांगबलवानाकाशं वशमानये ॥
तिथिर्वासरनक्षत्र योगः करणमेव च
इति पञ्चाङ्गमाख्यातं व्रतपर्वनिदर्शकम् ॥

→ जिस के द्वारा दिन तिथि नक्षत्र योग और करण इन पाँ-
तत्त्व का अंग अध्ययन किया जाता है। उसी को पंचांग ति-
पत्रिका जन्त्री या पात्रो भी कहा जाता है।

पंचाङ्ग के ऊपर राजा

→ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वर्ष आरम्भ में जो दिन रहता है। उसी
का मालिक राजा होता है। अथवा चैत्र कृष्ण अमावास्या
के दिन जो दिन रहता है। उस के अगले दिन का मालीक र
रहता है।

पंचाङ्ग के ऊपर मन्त्री

→ मेष की संक्रान्ती जिस दिन रहता है उस दिन का मालिक
वर्ष का मन्त्री रहता है।

संक्रान्ति परिचय

→ सूर्य एक राशि छोड़कर दूसरी राशि में प्रस्थान करता है उस
को संक्रान्ति कहते हैं। संक्रान्ति सूर्य - चन्द्र - मंगल - बुध -
शुक्र - शनि - राहु - और केतु - इन सभी ग्रहों की होती है। परन्तु
संक्रान्ति विशेष मानी जाती है।

भूमध्य रेखा

→ पृथ्वी के मध्य शून्य ·0· अंश पर पूर्व पश्चिम जो रेखा ग
उसी के कारण पृथ्वी दो ·2· भागों उत्तरी गोलार्ध और द
गोलार्ध में बंटी हुई है। उसी को भूमध्य रेखा या विषुवद् र
कहते हैं।

Scanned by TapScanner

कर्क वृत्त रेखा

> भूमध्य रेखा के उत्तर की ओर २३१/२० आक्षांश पर पूर्व पश्चिम जो रेखा गई है उसी को कर्क वृत्त रेखा कहते है।

मकर वृत्त रेखा २३.१/२० आक्षांश

> भूमध्य रेखा के दक्षिण की ओर पर जो रेखा पूर्व पश्चिम गई है उसी को मकर वृत्त रेखा कहते है।

उत्तरी आक्षांश

> भूमध्य रेखा के दक्षिण की ओर पूर्व पश्चिम जो रेखा गई उसी को उत्तरी आक्षांश कहते है।

दक्षिणी आक्षांश

> भूमध्य रेखा के दक्षिण की ओर पूर्व पश्चिम जो जो रेखा गई है। उसी को दक्षिणी आक्षांश कहते है। जिसे चित्र से स्पष्ट हो जाता है।

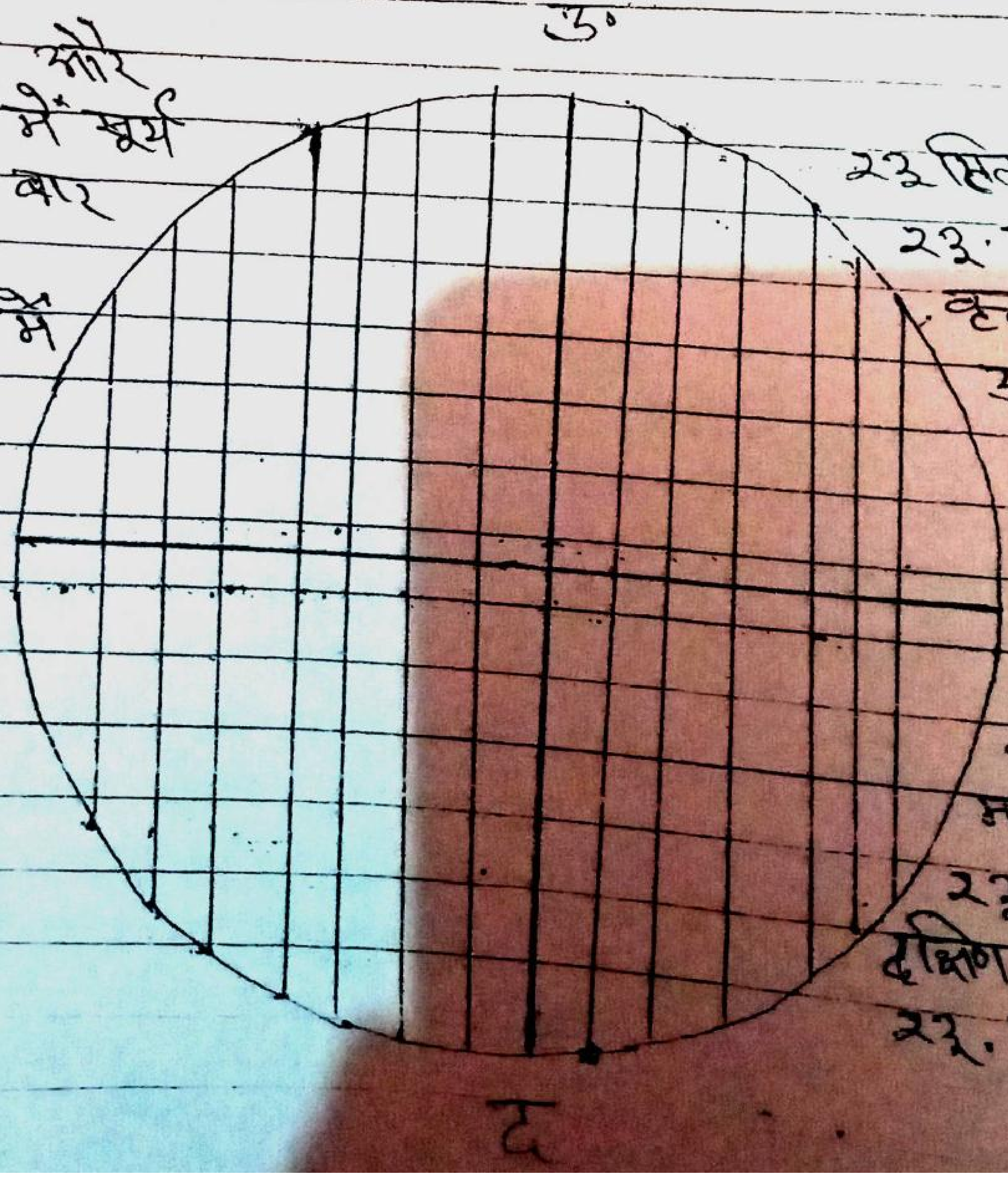

आक्षांश और आक्षांश में सूर्य ...ल में दो बार ...ते है ...कर वृत्त में ... दि०

२३ सितम्बर और २३ मार्च तक कर्क वृत्त २३१/२० उत्तर आक्षांश

२१ जुन को मकर वृत्त २३.१/२० दक्षिण आक्षांश २३. मार्च

→ देशान्तर - पृथ्वी में उत्तर दक्षिण जो जो रेखा गई है उसी को देशान्तर कहते है।

दक्षिणायन

→ सूर्य जब - कर्क - सिंह - कन्या - तुला - वृश्चिक और धनु इन छे राशि पर रहेगा उस समय दक्षिणायन होता है।

उत्तरायण

→ सूर्य जब - मकर - कुम्भ - मीन - मेष - वृष - और मिथुन इन छे राशियों में रहेगा उसी समय उत्तरायण होता है।

उत्तरी गोलार्ध में

→ सूर्य जब - मेष - वृष - मिथुन - कर्क सिंह - कन्या - इन छे राशि में रहता है उस समय सूर्य उत्तरी गोलार्ध में रहता है।

दक्षिणी गोलार्ध में

→ सूर्य जब - तुला - वृश्चिक - धनु - मकर - कुम्भ - मीन - इन छे राशियों में रहेगा उस समय सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में रहता है।

→ सूर्य साल में दो बार २३ सितम्बर और २१ मार्च को भूमध्य रेखा पर आता है। उस समय दिन और रात समान रहते है

→ सूर्य साल में एक बार २१ जून को कर्क वृत्त पर आता है। उस समय उत्तर गोलार्ध में सब से बड़ा दिन और सब से छोटा रात होता है।

→ सूर्य साल में एक बार २२ दिसम्बर को मकर वृत्त पर आता है। उस समय उत्तर गोलार्ध में सबसे बड़ी रात और सबसे छोटा दिन रहती है।

Scanned by TapScanner

पूर्व देशान्तर

→ ग्रीनविच रेखा के पूर्व में उत्तर दक्षिण जो रेखा गई है। उस को पूर्वी देशान्तर कहते है।

पश्चिम देशान्तर

→ ग्रीनविच रेखा के पश्चिम की ओर उत्तर दक्षिण जो रेखा गयी है। उसी को पश्चिम देशान्तर कहते है।

देशान्तर के आधार पर समय निकालना

→ किसी भी जगह का समय निकालने के लिये पहले देशान्तर की अन्तर निकाला जाता है। उस के शेष अंक को ४ से गुणान करने पर जो संख्या निकलता है उस में दिये गये समय में यदि पूर्व का समय निकालना हो तो जोडना और पश्चिम का निकालना निकालना हो तो घटाना चाहिये। संख्या के आधार में बडी संख्या को पूर्व और कम संख्या को पश्चिम कहते है।

उदाहरण

हरिद्वार रेखांश ७८·१०·   देशान्तर समय·२·३५·है।

हल्द्वानी रेखांश ·७९ :३२·

हल्द्वानी रेखांश ७९·३२ पू॰ ३०

हरिद्वार रेखांश −७८·१३· प॰८०

रेखांश अन्तर → १· १९

×४

५· ·१६

मिनट सेकेण्ड

५· ·१६

समय २· ३५: ००

−५· १६

२· ·२९ ·४४ हरिद्वार का समय हुआ।

दिनमान की परिभाषा

→ सूर्योदय से लेकर सूर्य अस्त तक के समय को दिन मान कहते है। पंचाङ्ग में दिनमान का घड़ी पल दिया रहता है। रात्रि मान निकालने के लिये अहोरात्र ६०.०० में दिनमान को घटाने पर रात्रि मान निकलेगा

उदाहरण

६०.	००.	
३१.	२८	दिन मान
२८.	३२	रात्रि मान हुआ

अहोरात्र ब्रह्मा जी का समय

→ ७१. चतुर्युग (चार युग) का एक मन्वन्तर होता है। १४ मन्वन्तर का एक कल्प होता है। इस प्रकार दो कल्प की ब्रह्मा जी का एक अहोरात्र (२४. घण्टा) होता है। तीस अहोरात्र का ब्रह्मा जी का एक महिना और बारह महिना का एक वर्ष होता है। ब्रह्मा जी की आयु १००. सौ वर्ष की होती है। वर्तमान में ब्रह्मा जी की आयु ५० वर्ष वित चुकी है। ५१ वर्ष के ये प्रथम अहोरात्र वितरहा है। वर्तमान समय में ६. मनु मन्वन्तर वित चुके है। यह सातवां ७. मनु के सताइसवां २७. युग वितकर अट्ठाइसवां २८. युग चलरहा है।

स्टेण्डर समय :

→ हमारे घडी में जो समय दिया रहता है। उसी को स्टेण्डर समय कहते है। ये स्टेण्डर समय प्रत्येक जगे पर घडी के मान से एक समान रहता है। जैसे भारत में दो बजे हुये तो जापान में या अन्य जगे पर भी वही के घडी अनुसार वहां पर भी घडी में दो ही बजे होंगे।

लोकल समय निकालने की विधि

→ स्टेण्डर समय घडी के अनुसार सभी जगों का एक ही रहता है परन्तु लोकल समय अलग अलग रहता है। लोकल समय निका[ले] के लिये स्टेण्डर देशान्तर (८२.३०. इलाहाबाद) का माना ग[या] है। इस से इष्टस्थान का देशान्तर घटाकर जो शेष अंक काल

बनता है। इसी को दस से गुणा करने पर मिनट सेकेण्ड का अन्तर आता है। स्टेण्डर देशान्तर में से इष्टस्थान का देशान्तर कम हुआ तो स्टेण्डर समय में (८२.३०) से मिनट सेकेण्ड का मान अन्तर घटाने पर या स्टेण्डर देशान्तर से इष्टस्थान का देशान्तर अधिक हुआ तो स्टेण्डर समय में से मिनट सेकेण्ड का अन्तर जोड़ने पर इष्टस्थान का लोकल समय होता है।

उदाहरण- कम होने पर स्टेण्डर देशान्तर ८२.३० लोकल हरिद्वार ७८.१३. हरिद्वार का स्टेण्डर समय २.२० है।

इलाहाबाद स्टेण्डर देशान्तर ८२.३०
हरिद्वार स्टेण्डर देशान्तर −७८.१३
स्टेण्डर देशान्तर → ४.१७
×४

देशान्तर के अन्तर मिनट → १७.०८.
सेकेण्ड हरिद्वार के हुये। स्टेण्डर समय
२.२०.००
−१७.८
२..०२.५२ देशान्तर
मिनट सेकेण्ड हरिद्वार का लोकल समय २. बजकर २. मिनट ५२. सेकेण्ड हुआ इसी तरह अन्यत्र भी जानना चाहिये।

अधिक हुआ तो

उदाहरण सिक्किम स्टेण्डर देशान्तर ८८.३९. है। पू०३०
इलाहाबाद स्टेण्डर देशान्तर ८२.३० है। प०दृ०
स्टेण्डर देशान्तर → ०६.०९
×४

रेखान्तर मिनट सेकेण्ड २४.३६

समय २.३०.००
+२४.३६
२.५४.३६ दो बजकर ५४ मिनट ३६. सेकेण्ड सिक्किम का लोकल समय हुआ।

Scanned by TapScanner

पञ्चाङ्ग परिवर्तन करने की विधि:

→ अपने पास जीस जगह का पञ्चाङ्ग हो उस से अन्यत्र जगह का सूर्योदय निकालने के लिये पंचाङ्ग जीस जगह का हो उसी जगह का देशान्तर और जीस जगह का सूर्योदय निकालना हो उसी जगह का देशान्तर में अन्तर करके जो शेष बचे उसी को ४ से गुणा करने वह अन्तर धन (+) या (−) ऋण रेखान्तर होगा। अब इष्ट स्थान का सूर्योदय निकालने के लिये पंचाङ्ग में जो सूर्योदय का मान दिया उसी सूर्योदय के समय में से रेखान्तर धन (+) या (−) ऋण कर इष्ट स्थान का सूर्योदय निकलता है। पंचाङ्ग से इष्ट स्थान पूर्व हुआ तो सूर्योदय के समय में रेखान्तर घटाना चाहिये यदि पश्चिम हुआ तो जोड़ना चाहिये।

उदाहरण

पंचांग दिवाकर स्थान जालन्धर का है। देशान्तर ७५.३४ है पंचांग का सूर्योदय ६.१०. बजे है। दिनमान २९.१६. पल है ५.५०. का सूर्यास्त है। इष्ट स्थान इम्फाल ९२.५८. देशान्तर

९२.५८
−७५.३४

शेष रेखान्तर → १७.२४
× ४

१ घण्टा ९ मिनेट ३६ सेकेण्ड अन्तर है। ६९.३६

पंचांग का सूर्योदय में ६ : १०. ००. सूर्योदय से घटाने पर इम्फाल

−१. ९. ३६

५. ००. २४ का सूर्योदय ५. बजकर मिनट २४ सेकेण्ड में हुआ।

अब सूर्यास्त के समय में ५. ५०. ००.
−१. ९. ३६

अन्तर घटाने पर ४.४०.२४ यह इम्फाल का. ४. ४०. २४ सूर्यास्त हुआ

Scanned by TapScanner

गणित ज्योतिष

> ६० प्रतिविपल १ एक विपल
> ६० विपल १ एक पल
> ६० पल १ एक घड़ी (कला ६०S)
> ६० घड़ी १ एक अंश
> ३० अंश १ एक राशि
> १२ राशि १ एक वर्ष (भगण) होता है।

राशि को पल बनाने की विधि;

> राशि की संख्या को ३० से गुणन करने पर अंश होगा अंश को ६० से गुणन करने पर घड़ी होती है। घड़ी को ६० से गुणन करने पर पल होता है।

पल को राशि बनाने की विधि.

> पल की संख्या को ६० से भाग देने पर भाग फल घड़ी की संख्या होती है। घड़ी की संख्या को ६० से भाग देने पर अंश होती है। अंश की संख्या को ३० से भाग देने पर भाग फल राशि होती है।

> घण्टा = घड़ी = पल
> मिनट = पल = विपल
> सेकेण्ड = विपल = प्रति विपल होता है।

काल और मान

> १ घण्टा = $2\frac{1}{2}$ घड़ी = ६० मिनट
१ घड़ी = २४ मिनट
१ मिनट = ६० सेकेण्ड
२४ घण्टा दिन रात ६० घड़ी

→ 1 राशि 30 अंश
→ 30 अंश 1 राशि
→ 1 अंश 60 कला
→ 60 कला 1 अंश
→ 1 कला 60 विकला
→ 1 विकला 60 प्रतिविकला होता है।

घडी पल को घण्टे मिनट में परिवर्तन की विधि:

→ घडी पल को घण्टे मिनट में परिवर्तन करने के लिये 2 से गुणन करें और 5 से भाग दें।

घण्टे मिनट को घडी पल में परिवर्तन:

→ घण्टे मिनट को घडी पल में बदलने के लिये 5 से गुणन करें और 2 से भाग दें।

इष्टकाल बनवाने की विधि:

→ सूर्योदय से लेकर बालक के जन्म समय तक में जो घ[ण्टे] मिनट का समय होता है। उस से घडी पल बनाने से जो घडी पल हो। उस से इष्टकाल कहते है।

(1) सूर्योदय से लेकर दिन के 12.50 तक का बालका [जन्म] हो तो जन्म समय में सूर्योदय घटाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करें इ[ष्ट] काल होगा।

(2) दिन के 1 बजे से रात्रि के 12.50 तक का जन्म जन्म समय में 12 (घण्टा) जोड कर सूर्योदय घटाये $2\frac{1}{2}$ गुणा करें इष्ट काल होगा।

Scanned by TapScanner

(३) रात्रि के १. बजे से लेकर सूर्योदय से पहले का जन्म होतो जन्म समय में २४ (घण्टा) जोड़ें और सूर्योदय घटाकर २½ गुणा करें इष्टकाल होगा।

भयात बनाने की विधि :

(१) यदि जन्म दिन का नक्षत्र मान इष्ट काल से अधिक होतो ६०. में गत नक्षत्र मान घटाकर इष्ट काल जोड़ें वह भयात होगा।

(२) यदि जन्म दिन का नक्षत्र मान इष्टकाल से कम होतो इष्टकाल में जन्म नक्षत्र मान घटायें वह भयात होगा।

भभोग बनाने की विधि :

(१) यदि जन्म दिन का नक्षत्र मान इष्टकाल से अधिक होतो ६०. (घड़ी पल) में गतनक्षत्र मान घटाकर जन्म दिन का नक्षत्र मान जोड़ें वह भभोग होगा।

(२) यदि जन्म दिनका नक्षत्रमान इष्टकाल से कम होतो ६०. (घड़ी पल) में जन्म नक्षत्रमान घटाकर आगामी नक्षत्रमान जोड़ें वह भभोग होगा

(३) यदि एक ही नक्षत्र दो दीन होतो जीस दिन वृद्धि हो उस दिन का इष्ट काल बनाकर इष्टकाल की घड़ी पल और नक्षत्र की घड़ी पल देखें यदि नक्षत्र अधिक होतो वृद्धि वाले नक्षत्र के चतुर्थ चरण से नाम होगा। यदि इष्टकाल अधिक होतो आगामी नक्षत्र से नाम होगा। उसी अनुसार हिसाब करें।

Scanned by TapScanner

(४) यदि एक ही दिन दो नक्षत्र हो तो उस दिन का इष्टकाल बनायें और देखें की पहले वाले नक्षत्र से इष्टकाल कम हो तो उसी नक्षत्र के चतुर्थ चरण से नाम होगा। यदि पहले वाले नक्षत्र से इष्टकाल अधिक हो तो दूसरे वाले नक्षत्र से नाम होगा। उसी अनुसार हिसाब करें।

नामाङ्करण करने की विधि :

(१) भभोग के घटी पल को ४ से भाग देकर भाग फल प्रथम चरण का मान निकलेगा प्रथम चरण को द्विगुणा कर द्वितीय चरण का मान एवं त्रिगुणा कर के तृतीय चरण का मान निकलेगा चतुर्थ चरण स्वयं भभोग होता है।

भयात को चार चरणों में देखें की किस चरण मान में घटता है। नक्षत्र के उसी चरण से बालक बालिका का नाम होगा।

(१) क् और ष् = द्वारा - क्ष - अक्षर बनता है।

(२) ज - और - ञ = द्वारा - ज्ञ - अक्षर बनता है।

(३) त - और - र = द्वारा - त्र - अक्षर बनता है।

चन्द्र स्पष्ट करने की विधि:

→ भयात एवं भभोग के घटी को भिन्न भिन्न ६०. से गुणा करें पलों को जोड़ दें भयातैक्य एवं भभोगैक्य बनेगा। भयातैक्य को ६०. से गुणन करें गुणन फल विपलात्मक भयातैक्य बनेगा। विपलात्मक भयातैक्य को २. बार भभोगैक्य से भाग दें शेष संख्या को ६० से गुणन कर पुनः भभोगैक्य से भाग दें तीनों भाग फल में गत नक्षत्र की संख्या को ६० से गुणन कर गुणन फल को जोड़ें और २. से गुणन करें गुणन फल को ९. से भाग दें शेष संख्या को ६०. से गुणन करते हुये तीन बार भाग दें प्रथम भाग फल में ३०. का भाग दें। भाग फल राशि शेष अंश बनेगा द्वितीय भागफल कला और तृतीय भाग फल विकला होगी।

→ चन्द्रमा एक घण्टा में अं. क. वि. ०. ३२. ३०. अंश कलादि की गति से चलता है।

→ पू. घडी नक्षत्र में अं. क. वि. १. ६. ४०. अंश कला विकला चन्द्रमा का होता है।

→ १२. ३०. अंश कला में चन्द्रमा एक तिथि भोग लेता है। चन्द्रमा को एक राशि में सवा दो तिथि का समय होता है।

चन्द्रगति निकालने की विधि:

→ ४८००० की संख्या को ६० से गुणन करें और गुणन फल में भभोगैक्य से भाग दें शेष को ६० से गुणन कर पुनः भभोगैक्य से दुबारा भाग दें दोनों भाग फल चन्द्र गति होगी।

चन्द्र गति – ६०० से १००० के अन्तर में आता है।

गति तीन अंकों में और कला दो अंकों में होता है।

Scanned by TapScanner

सूर्यादि नव ग्रह स्पष्ट विधि :

-> ग्रह स्पष्ट चक्र पंचांग में ८.८ दिन के रहते हैं। यदि जन्म दिन से पिछेका चक्र है तो धन चालन होगा। दिन संख्या गिनकर इष्टकाल के पूर्व में जोड़ें एवं स्पष्ट ग्रह चक्र में दिगई गति से गुणन करें गुणन फल को बायीं तरफ से ६० का भाग देते हुये अन्तिम अंक को चक्र में दिये स्पष्ट ग्रह में जोड़ें ग्रह स्पष्ट होगा।

-> यदि जन्म दिन से आगेका ग्रह स्पष्ट चक्र है तो ऋण चालन होगा और दिन संख्या गिनकर दिन संख्या को इष्टकाल में घटायें और ग्रह स्पष्ट चक्र में दिगई गति से गुणन करें।

ग्रहों का मार्गी वक्री निर्णय :

मार्गी	मार्गी वक्री		वक्री
सूर्य	मंगल	बुध	राहु
चन्द्र	गुरु	शनि	केतु
	शुक्र		

-> बालक के जन्म दिन से आगेका ग्रह स्पष्ट चक्र है तो ऋण चालन होगा। ९. ता का जन्म ११. ता. का चक्र;

-> जन्म दिन से पिछेका ग्रह स्पष्ट चक्र है तो धन चालन होगा।
११. ता का चक्र १३. ता. का जन्म

-> जिस दिन का ग्रह स्पष्ट चक्र है उसी दिन का जन्म है तो धन चालन होगा- जैसे ३. ता. का चक्र, ३. ता. का जन्म

ऋण चालन

-> ऋण चालन में यदि ग्रह मार्गी है तो उपर निचे दोनो जगह घटा[illegible]

-> ऋण चालन में यदि ग्रह वक्री है तो उपर घटायें और निचे जोड़ें

Scanned by TapScanner

धन चालन

→ धन चालन में यदि ग्रह मार्गी होतो उपर निचे दोनों जगह जोड़ दें।

→ धन-चालन में यदि ग्रह वक्री होतो उपर जोड़ें और निचे घटायें।

शाके वर्ष अयनांश बनाने की विधि:

→ इष्ट शाके वर्षों के अयनांश निकालने के लिये निम्न चक्रों में देखकर १८००. सौ शाके वर्ष से आगे के इष्ट वर्षों के कला विकला जोड़ें तत्काल अयनांश बनेगा।

१८००. सौ वर्ष के अयनांश अं० २२. क० ८. वि० ३३. में जोड़ें तत्कालिक अयनांश निकलेगा।

१	२	३	४	५	६	७	८	९		वर्ष
०	१	२	३	४	५	५	६	७		कला
५०	४०	३१	२१	११	१	२१	४२	३२		विकला
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००	वर्ष
८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६६	७५	८३	कला
२३	४६	७	२९	२	१४	३६	५८	२२	४३	विकला

पलभा बनाने की विधि:

→ सर्व प्रथम इष्ट स्थान के अक्षांश से अग्रिम अक्षांश को अंगुलादि सहित निम्न चक्र में से लिखें फिर उस के नीचे इष्ट स्थान के अक्षांश को अंगुलादि सहित उसी चक्र में से लिख कर अंगादि को घटायें शेष जो कलादि प्राप्त हो उसे इष्ट स्थान के अक्षांश के पल द्वारा गुणा करें गुणन फल को बायीं तरफ से ६०. का भाग देते हुये अन्तिम के २. अंकों को अंश वाले अंक में जोड़ दें प्रथम के २. अंक पल भा होंगे।

Scanned by TapScanner

अक्षांश के अंगुलादि ज्ञान चक्र:

अक्षा०	अं०	व्यं०	पि०	अक्षा०	अं०	व्यं०	वि०	अक्षा०	अं	व्यं	वि
१	०	१२	१८	१९	४	७	५५	३७	९	२	३५
२	०	१५	९	२०	४	२२	१	३८	९	२२	३०
३	०	३६	४४	२१	४	३६	२६	३९	९	४३	१
४	०	५०	२१	२२	४	५०	५२	४०	१०	४	९
५	१	३	०	२३	५	५	३८	४१	१०	२५	५०
६	१	१५	४०	२४	५	२०	३१	४२	१०	४८	१८
७	१	२८	२३	२५	५	३५	४२	४३	११	११	२४
८	१	४१	१०	२६	५	५१	७	४४	११.	३५	२४
९	१	५४	००	२७	६	६	५०	४५	१२	००	००
१०	२	६	५४	२८	६	२२	४८	४६	१२	३५	३७
११	२	१९	५५	२९	६	३९	४	४७	१२	५५	४
१२	२	३३	००	३०	६	५५	४१	४८	१३	१९	३७
१३	२	४६	१२	३१	७	१२	३६	४९	१३	४८	१८
१४	२	५९	२८	३२	७	२९	५३	५०	१४	१८	३
१५	३	१२	५४	३३	७	४७	३१	५१	१४	१९	८
१६	३	२६	२४	३४	८	५	३८	५२	१५	२१	३२
१७	३	४०	५	३५	८	२४	७	५३	१५	५५	३०
१८	३	५३	५६	३६	८	४३	५	५४	१६	३१	१
								५५	१७	८	१३

चरखण्ड बनाने की विधि:

→ पलभा को क्रमस ३ बार १०×८×१० से गुणन करें गुणन फल को
बायीं तरफ ६०-का भाग दें तृतीय गुणन फल + भाग फल को ३- से
भाग दें तीनों भाग फल चरखण्ड होंगे।

Scanned by TapScanner

लङ्कोदय एवं स्वोदयमान:

→ २७८ - २९९ - ३२३ - ये क्रम और उत्क्रम से मेषादि ६ राशियों का पलात्मक लंकोदय मान है। इस में अपने स्थान के ३ चरखण्डों को क्रम से घटाने और उत्क्रम से जोड़ने से अपने स्थान के मेषादि ६ राशियों के उदयमान होते हैं। लंकोदयमान में चरखण्ड को क्रम से ३ बार घटाने और ३ बार जोड़ने पर स्वोदयमान बनेगा। स्वोदयमान को जोड़ने पर सम्पूर्ण योग १८०० ही होगा।

मे+मी	२७८ − ७४	२०४
वृ+कु	२९९ − ५९	२४०
मि+म	३२३ − २४	२९९
क+ध	३२३ + २४	३४६
सिं+वृ	२९९ + ५९	३५८
कं+तु	२७८ + ७४	३५२
	१८००.	१८००.

लग्न साधन विधि!

→ तत्कालिक सूर्य स्पष्ट में अयनांश जोड़ कर सायन सूर्य बनायें सायन सूर्य को आगामी राशि में घटायें शेष भोग्यांश होंगे भोग्यांश को उसी राशि के स्वोदय मान से गुणन करें गुणन फल को बायीं तरफ ६०. का भाग दें शेष तृतीय अंक को ३० का भाग दें भाग फल को पलात्मक इष्टकाल में घटादें उस के बाद शेष पलात्मक इष्टकाल में जिन जिन राशि के स्वोदयमान (अग्रिम राशि से) घटा सके घटाते जायें जो अन्तिम बार घटे वह शुद्ध संज्ञक राशि होगी। जो न घटे वह अशुद्ध संज्ञक राशि होगी। शेष इष्टकाल को ३० से गुणन करें गुणन फल में बायीं तरफ ६०. का भाग दें तृतीय अंकों को अशुद्ध संज्ञक राशि के स्वोदय मान से ३ बार भाग दें भाग फल में पूर्व शुद्ध संज्ञक राशि जोड़ कर अयनांश घटाने पर लग्न स्पष्ट होगा।

→ यदि उक्तरीति से साधित भोग्यकाल से इष्टकाल अल्प हो। अर्थात इष्टकाल में भोग्यकाल नहीं घटता तो उस पलात्मक इष्टकाल को ही ३०. से गुणन कर सायन सूर्य राशि के स्वोदय मान से भाग देने पर

Scanned by TapScanner

जो अंशादि लब्धि प्राप्त हो उस को तत्कालिक स्पष्ट सूर्य में जोड़ने के बाद स्पष्ट लग्न होता है।

विशेष → ३० का भाग देकर भाग फल को पलात्मक इष्टकाल में घटा दें यदि पलात्मक इष्टकाल में भाग फल नहिं घटा तो इष्टकाल को ३० से गुणन कर के अग्रिम कार्य करें अर्थात गुणन फल में ६० का भाग देकर तृतीय अंक को अशुद्ध राशि के स्वोदय मान से ३ बार भाग दें भाग फल में पूर्व शुद्ध संज्ञक राशि जोड़कर अयनांश घटाने पर लग्न स्पष्ट होगा।

गुलिक लग्न साधन

→ रवि आदि प्रत्येक वारों में दिनमान का आठ भाग करके देखें। उनमें उसी दिन से आरम्भ करके प्रत्येक भागों के स्वामी वह ग्रह होते हैं किंतु आठवें भाग का कोई स्वामी नहीं होता। इस में शनि का पुत्र भाग गुलिक कहलाता है। परन्तु रात्रि में इस से भिन्न है अर्थात रात्रि को आठ भागों में बाँटकर वारेश से पंचम ग्रह से गिनने पर जो भाग शनि पुत्र का आवे वही गुलिक है। गुलिकेष्ट ज्ञानार्थ क्षेपकांक चक्र द्वारा गुलिकेष्ट काल इस प्रकार समझें।

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	वार
७	६	५	४	३	२	१	दिन
							रात्रि
३	२	१	७	६	५	४	

दिन मान या रात्रि मान को जिस में जन्म हो आठ भाग करके जो भाग मिले उस में चक्रोक्त क्षेपकांक से गुणा करने पर जो घट्यादि प्राप्त हो वही गुलिक लग्न ज्ञानार्थ इष्टकाल होगा। इसी इष्टकाल से लग्न साधन करते वही गुलिक लग्न है। जैसे किसी का जन्म रवि बार को दिन में है और दिनमान ३५.०९ है तो इसका अष्टांश ४.२८.३७ घट्यादि हुआ। रविबार के दिन का क्षेपक ७ है इस से गुणा किया तो ३१.००.१९ गुलिक लग्न हेतु इष्टकाल

प्राप्त हुआ इसी इष्टकाल पर से पूर्वोक्त रीति से जो लग्न प्राप्त होगी वही गुलिक कहलायेगी।

मांदि साधन प्रकार

→ रवि आदि वारादि में क्रम से २६.२२.१८.१४.१०.६.२. से दिन मान में गुणा करके ३०.का भाग देने पर लब्धि तुल्य घडी पल इष्टकाल होगा इसी पर से स्पष्ट लग्न साधन करने पर वही मांदि लग्न होगा। जैसे रविवार को दिनमान ३३.०.में २६.से गुणा किया ८५१.५८. हुआ ३० का भाग दिया तो २८.४३. इष्टकाल प्राप्त हुआ इसी इष्टकाल से जो लग्न साधन किया जावेगा वही मांदि लग्न समझना चाहिये।

नत साधन विधि:

→ दिन में मध्याह्न होने में जितना काल बाँकी हो वह दिवा पूर्व नत तथा मध्याह्न से आगे जितना काल बिता हो वह दिवा परनत समझना एवं रात्रि में मध्य रात्रि होने में जितना बाँकी हो वह रात्रि पूर्व नत और मध्य रात्रि से आगे जितना काल बिता हो वह रात्रि परनत समझना चाहिये।

पूर्व नत:

→ यदि इष्टकाल दिनार्ध से कम हो तो दिनार्ध में इष्टकाल घटायें पूर्वनत होगा।

पर नत:

→ दिनार्ध से इष्टकाल अधिक हो तो इष्टकाल में दिनार्ध घटायें पर नत होगा।

रात्रि पूर्व नत:

→ रात्रि के पूर्व भाग में जन्म हो तो इष्टकाल को दिन मान + रात्र्यर्ध मान में घटायें पूर्व नत बनेगा।

अर्ध रात्रि पर नत:

→ अर्ध रात्रि के बाद का जन्म हो तो दिनमान + रात्र्यर्ध मान जोड़कर इष्टकाल में घटायें पर नत होगा।

दशम लग्न साधन विधि:

→ यदि दिनका दशम साधन करना हो तो सायन सूर्य को मेषादि से भोग सायन सूर्य की राशि से अग्रीम राशि में सायन सूर्य को घटा कर जो भोग्यांश होंगे भोग्यांश को उसी राशि के लंकोदयमान से गुणन करें और गुणन फल में बायी तरफ ६० का भाग दें तृतीय अंकों को ३०. का भाग ३ बार दें भाग फल को पलात्मक नत में घटायें उस के बाद शेष पलात्मक नत में राशियों की लंकोदय मान घटाते जायें जो अन्तिम बार घटे वह शुद्ध संज्ञक राशि होगी जो न घटे वह अशुद्ध संज्ञक राशि होगी। अब शेष पलात्मक नत को ३० से गुणन करें गुणन फल को बायीं तरफ ६० का भाग दे तृतीय अंकों को अशुद्ध संज्ञक राशि की लंकोदय मान से ३ बार भाग दें भाग फल को अशुद्ध संज्ञक राशि में घटायें और आयनांश घटाने पर दशमलग्न स्पष्ट होगा।

विशेष → तृतीय अंकों को ३० का भाग देकर भाग फल पलात्मक नत में घटायें यदि पलात्मक नत में भाग फल नहीं घटा तो पलात्मक नत को ३० से गुणन कर के अग्रीम कार्य करें।

नोट → यदि पर नत हो तो भाग फल को शुद्ध संज्ञक राशि में जोड़ें और आयनांश घटायें।

→ यदि पूर्व नत हो तो भाग फल को अशुद्ध संज्ञक राशि में घटायें और आयनांश घटाने पर दशम लग्न स्पष्ट होगा।

रात्रि दशम साधन विधि!

→ यदि रात्रिका दशम साधन करना हो तो सायन सूर्य के राशि में ६. राशि जोड़कर अग्रीम राशि में घटायें भोग्यांश होंगे भोग्यांश को उसी राशि के लंकोदयमान से गुणन करें गुणन फल की बायीं तरफ ६०. का भाग दें तृतीय अंकों को ३० से भाग दें भाग फल को पलात्मक नत में घटायें शेष पलात्मक नत में राशि के लंकोदय मान घटायें जो अन्तिम बार घटे वह शुद्ध संज्ञक राशि होगी जो न घटे वह अशुद्ध संज्ञक राशि होगी। राशि घटाते समय अग्रीम न घटा कर पिछे वाली घटाना चाहिये। शेष पलात्मक नत को ३० से गुणन करें और बायी तरफ ६० का भाग दें अन्तिम अंकों को अशुद्ध संज्ञक राशि के लंकोदय मान

Scanned by TapScanner

~~से द्वि बार भाग दें~~

नोट → यदि पर नत हो तो भाग फल को युद्ध संज्ञक राशि में जोड़ें और समानांश घटायें।

→ यदि पूर्व नत हो तो भाग फल को अयुद्ध संज्ञक राशि में घटायें और समानांश घटाने पर क्रम लग्न स्पष्ट होगा।

→ पश्चात्‌ नत में राशियों की लंकोदय मान घटाते समय आगे वाली राशि की लंकोदय मान न लेकर उल्टे क्रम से राशि की लंकोदय मान घटाना चाहिये।

द्वादश भाव स्पष्ट विधि :

→ लग्न में ६ राशि जोड़ने पर सप्तम भाव स्पष्ट होगा एवं दशम लग्न में ६ राशि जोड़ने पर चतुर्थ भाव स्पष्ट होगा। चतुर्थ भाव में लग्न को घटाकर शेष अंकों को ३० से गुणन करें और अंश मिलाकर ६ का भाग दें भाग फल को लग्न में जोड़ने पर लग्न सन्धि बनेगी फिर लग्न सन्धि में भाग फल जोड़ने पर द्वितीय भाव बनेगी द्वितीय भाव में भाग फल जोड़ने पर द्वितीय भाव सन्धि बनेगी फिर द्वितीय भाव सन्धि में भाग फल जोड़ने पर तृतीय भाव बनेगी तृतीय भाव में भाग फल जोड़ने पर तृतीय भाव सन्धि बनेगी तृतीय भाव सन्धि में भाग फल जोड़ने पर स्वयं चतुर्थ भाव बनेगी।

तृतीय भाव के सन्धि में १ राशि जोड़ने पर चतुर्थ भाव सन्धि बनेगी। तृतीय भाव में २ राशि जोड़ने पर पंचम भाव बनेगी द्वितीय भाव सन्धि में ३ राशि जोड़ने पर पंचम भाव सन्धि बनेगी द्वितीय भाव में ४ राशि जोड़ने पर षष्ठ भाव बनेगी लग्न के सन्धि में अर्थात्‌ प्रथम भाव सन्धि में ५ राशि जोड़ने पर षष्ठ भाव सन्धि बनेगी। लग्न में ६ राशि जोड़ने पर सप्तम भाव बनेगी पुनः लग्न सन्धि में ६ राशि जोड़ने पर सप्तम भाव सन्धि बनेगी। अब द्वितीय भाव से आगे भाव की राशि में ६ राशि और सन्धि की राशि में भी ६ राशि जोड़ते हुये षष्ठ

Scanned by TapScanner

भाव सन्धि तक जाने से द्वादश भाव और सन्धि बनेगी।

विशेष → कोई भी ग्रह सन्धि में रहने से नष्ट फल वाला और भाव में रहने से पूर्ण फल वाला होता है।

चलित भाव बनाने की विधि :

→ ज्योतिष पद्धति अनुसार लग्न स्पष्ट को भाव का मध्य बिन्दु कहते हैं। द्वादश भावों में ग्रहों की ठीक ठीक स्थिति जानने के लिये चलित भाव कुण्डली बनाया जाता है। चलित के बिना ग्रहों की स्थिति की ठीक ज्ञान नहीं होता और फल कथन में पूर्ण सूक्ष्मता नहीं होता है। चलित भाव कुण्डली बनाने के लिये द्वादश भाव स्पष्ट और नव ग्रह स्पष्ट दोनों को ध्यान में रखना चाहिये। यदि कोई ग्रह राश्यंशादि किसी भाव के राश्यंशादि से कम होगा तथा उस भाव का आरम्भ सन्धि से कम होगा तो पिछले भाव में तथा कोई ग्रह विराम सन्धि से अधिक होगा तो वह ग्रह आगामी भाव में लगाया जायेगा।

विंशोत्तरी महादशा निकालने की विधि :

→ पलात्मक भयात को अर्थात भयातैक्य को जिस ग्रह की महादशा चल रही हो उस के पूर्ण वर्ष संख्या से गुणन करके गुणन फल में पलात्मक भभोग से भाग देने पर भाग फल भुक्त वर्ष होगी। फिर शेष भयातैक्य को १२ मास से गुणन करके भभोगैक्य से भाग देने से भाग फल भुक्त मास होगी शेष भयातैक्य को ३० दि से गुणन कर के भभोगैक्य से भाग देने से भाग फल भुक्त दिन होग अब इन सब भाग फलों को जिस दशा में बालक का जन्म हो उस ग्रह की दशा पूर्ण वर्ष में घटा देने से भोग्य वर्ष मासादि निकल अब बालक के जन्म दिन के इष्ट वर्ष मासादि में भोग्य वर्ष मासादि जोड़ने पर बालक के जन्म समय कालिन विंशोत्तरी महादशा बन जायेगी अब आगे दशा के वर्ष में अन्य ग्रह के पूर्ण वर्ष जोड़ते जायें।

भाव सन्धि तक जाने से द्वादश भाव और सन्धि बनेगी।

विशेष → कोई भी ग्रह सन्धि में रहने से नष्ट फल वाला और भाव में रहने से पूर्ण फल वाला होता है।

चलित भाव बनाने की विधि :

→ ज्योतिष पद्धति अनुसार लग्न स्पष्ट को भाव का मध्य बिन्दु कहते हैं द्वादश भावों में ग्रहों की ठीक ठीक स्थिति जानने के लिये चलित भाव कुण्डली बनाया जाता है। चलित के बिना ग्रहों की स्थिति की ठीक ज्ञान नहीं होता और फल कथन में पूर्ण सुक्ष्मता नहीं होता है। चलित भाव कुण्डली बनाने के लिये द्वादश भाव स्पष्ट और नव ग्रह स्पष्ट दोनों को ध्यान में रखना चाहिये। यदि कोई ग्रह राश्यंशादि किसी भाव के राश्यंशादि से कम होगा तथा उस भाव का आरम्भ सन्धि से कम होगा तो पिछले भाव में तथा कोई ग्रह विराम सन्धि से अधिक होगा तो वह ग्रह आगामी भाव में लगाया जायेगा।

विंशोत्तरी महादशा निकालने की विधि :

→ पलात्मक भयात को अर्थात भयातेकय को जिस ग्रह की महादशा चल रही हो उस के पूर्ण वर्ष संख्या से गुणन करके गुणन फल में पलात्मक भभोग से भाग देने पर भाग फल भुक्त वर्ष होगी फिर शेष भयातैकय को 12 मास से गुणन करके भभोगैकय से भाग देने से भाग फल भुक्त मास होगी शेष भयातैकय को 30 दिन से गुणन कर के भभोगैकय से भाग देने से भाग फल भुक्त दिन होगी अब इन सब भाग फलों को जिस दशा में बालक का जन्म हो उसी ग्रह की दशा पूर्ण वर्ष में घटादेने से भोग्य वर्ष मासादि निकल आयेगा अब बालक के जन्म दिन के इष्ट वर्ष मासादि में भोग्य वर्ष मासादि जोड़ने पर बालक के जन्म समय कालिन विंशोत्तरी महादशा चक्र बनजायेगी अब आगे दशा के वर्ष में अन्य ग्रह के पूर्ण वर्षादि जोड़ते जाये।

योगिनी दशा निकालने की विधि:

→ जिस नक्षत्र में बालक बालिका का जन्म हो पंचांग में दि गई आधार पर भुक्त चक्र में देख कर बालक के जन्म नक्षत्र के योगिनी के भोग्य कर लेना चाहिये। जिस नक्षत्र में जन्म हो इसी गुणन फल को दशा वर्षों की संख्या से भयातैक्य को गुणन करें। शेष भयातैक्य को भभोगैक्य से भाग दें भाग फल भुक्त वर्ष होगा। भभोगैक्य से भाग दें भाग फल 12 से गुणन करें गुणन फल को भभोगैक्य से भाग दें और गुणन भुक्त मास होगा शेष भयातैक्य को 30 से गुणन करें बनेंगे। फल को भभोगैक्य से भाग देने पर भुक्त दिन बनेंगे। अब योगिनी महादशा के पूर्ण वर्ष में से तीनों भाग फल को घटाने पर शेष भोग्य वर्ष मास दिन बन जायेगा। अब बालक के जन्म वर्ष मास दिनादि में भोग्य वर्ष मासादि जोड़ने पर तत्काल योगिनी महादशा चक्र बन जायेगा।

त्रिभागी दशा निकालने की विधि:

→ बालक के जन्म नक्षत्र संख्या में दो अंक 2 घटायें और शेष अंक में 9 से भाग देने पर त्रिभागी दशा निकल आयेगा शेषांक 1·2·3·4·5·6·7·8·0 रहने पर · आ· चं· भौ· रा· बृ· श· बु· के· शु· क्रम से दशा जान लेना चाहिये। इस तरह नक्षत्र द्वारा दशा ज्ञात होने पर भयातैक्य को जिस ग्रह की महादशा चल रही हो उस के पूर्ण वर्ष संख्या से गुणन करें फिर गुणन फल में भभोगैक्य से भाग दें भाग फल भुक्त वर्ष होगी अब शेष भयातैक्य को उस ग्रह की पूर्ण वर्ष के साथ मास हो तो मास संख्या द्वारा गुणन करें यदि न हो तो 12 मास से गुणन करके गुणन फल में भभोगैक्य से भाग देने पर भुक्त मास होगा। शेष भयातैक्य को 30 दिन से गुणन करके गुणन फल में भभोगैक्य से भाग देने पर भुक्त दिन होगा। अब तीनों भाग फल को ग्रह के पूर्ण वर्ष मासादि में घटाने पर शेष भोग्य वर्ष मासादि होगा। अब बालक के जन्म समय में भोग्य वर्ष मासादि जोड़ने पर तत्काल त्रिभागी महादशा चक्र बनेगा।

→ सूर्य के 12. अंश आसपास चन्द्र अस्त हो जाता है।

→ सूर्य के 17. अंश आस पास मंगल अस्त हो जाता है।

→ सूर्य के 13. अंश मार्गी और 12 अंश में वक्री होने पर बुध अस्त हो जाता है।

→ सूर्य के 11. अंश आसपास गुरु अस्त हो जाता है।

→ सूर्य के 9. अंश मार्गी और 8 अंश वक्री आसपास में शुक्र अस्त हो जाता है।

→ सूर्य के 15. अंश आस पास शनि अस्त हो जाता है।

ग्रहों की अवस्था ज्ञान :

→ विषम राशियों में ग्रह क्रम से बाल कुमार युवा वृद्ध और मृत अवस्था तीस अंश में होते है। अर्थात् 6. अंश बाल 12. अंश तक कुमार 18. अंश तक युवा 24 अंश तक वृद्ध 30 अंश तक मृत अवस्था प्राप्त होते है।

समराशियों में क्रम से मृत - वृद्ध - युवा - कुमार बाल अवस्था 6.6. अंश तक रहते है।

विषम राशि

राश्यादि	0	2	4	6	8	10
अंशादि	6	12	18	24	30	00

समराशि

लग्न	1	3	5	7	9	11
अंशादि	6	12	18	24	30	00

लग्नशुद्धि देखने की विधि :

→ सूर्य स्पष्ट का राशि अंशादि लिया जाता है। सूर्य 2.20.5.25 है। पंचांग में लग्न सारणी में देखने पर राशि और अंश के सामने 15. 6. मिला अब इस में इष्टकाल जोड़ने पर

	घ० प०	
	15. 6	
+	26. 16	इष्टकाल
	41. 22	योग

हुआ अब लग्न सारणी में घटाने पर 41.26 में घटा तो स्पष्ट लग्न

७.८.४१.२३. हुआ सारणी में घटाते समय जिस नगर का बालक का जन्म हो उसी नगर के लिये लग्न सारणी पंचांग में दिया रहता है। उसी में घटाये नहीं तो अपने आस पास वाले नगरों के लिये जो सारणी दिया है। उस में घटायें।

दृश्म लग्न शुद्धि देखने की विधि:

→ दृश्म लग्न शुद्धि देखने के लिये सूर्य स्पष्ट के अंशादि लिया जाता है। सूर्य स्पष्ट २.२०.५.२५. है। दृश्म लग्न सारणी में देखने पर राशी और अंश के सामने कोष्ठक में ३२.१९ मिला अब नत।

घ० प०
३२ . १९
नत → + ८ . ४६
४१ . ०५ जोडने पर सम्पूर्ण योग हुआ अब दृश्म लग्न सारणी में घटाने पर ४१.६. की कोष्ठक में घटा तो स्पष्ट दृश्म लग्न ४.१२.४१.५. हुआ।

ग्रहो की शयनादि अवस्था:

→ ग्रहों की शयनादि अवस्था जानने के लिये ग्रह जिस नक्षत्र में संचार कर रहा हो उस नक्षत्र संख्या को ग्रह की संख्या से

आ. च. मं. बु. बृ. शु. श. रा. के.
१. २. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. संख्या गुणा करें

और गुणन फल को उसी ग्रह के अंश से पुन गुणन करें और गुणन फल में जन्म नक्षत्र संख्या इष्ट घड़ी पल जन्म लग्न ये सभी जोड़ कर योग फल में १२. से भाग दें शेष १. शयन २. उपवेशन ३. नेत्रपाणी ४ प्रकाश ५. गमन ६. सभा ७. आगम ८. भोजन ९ नृत्य लिप्सा १० कौतुक ११. निद्रा चेष्टा अवस्था जानना चाहिये।

ग्रहो के शुभ पाप वर्ग

शुभ वर्ग			
शुक्र	गुरू	बुध	चं
२.७.	९.१२.	३.६.	४.

पाप वर्ग		
मंगल	शनि	सूर्य
१.८.	१०.११.	५.

Scanned by TapScanner

ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री:

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ग्रह:
च	सू	सू	सू	सू	बु	बु	शु	बु	मित्र
मं	बु	च	शु	च	शं	शु	शं	गु	
गु		गु		मं			बु		
	मं	शु	मं	शं	मं	गु			सम:
बु	गु	शं	गु	श	गु	रा		म	
	शु	के	शं	के	रा	के	बु	श	
	शं		रा, के		के		के	शु	
शु, शं						सू	सू	सू	शत्रु
रा	रा	रा	च	बु	सू	च	च	च	
के	के	बु		शु	च	मं	मं	रा	

> कुण्डली में जो ग्रह जिस स्थान में रहता है। वह उस से २.३.४. १०.११.१२. स्थान में स्थित ग्रहों के साथ मित्रता रखता है। और १.५.६.७.८.९. स्थान में स्थित ग्रहों के साथ शत्रुता रखता है

मित्र	मित्र	=	अधिमित्र
सम	शत्रु	=	शत्रु
शत्रु	शत्रु	=	अधिशत्रु
सम	मित्र	=	मित्र
शत्रु	मित्र	=	सम

तात्कालिक मैत्री और नैसर्गिक मैत्री से अतिमित्र और अतिशत्रु बनकर पांच प्रकार की मैत्री होती है। तात्कालिक और नैसर्गिक दोनों मित्र होने से वे अधिमित्र होते। दोनों जगह शत्रुता होने से अधिशत्रु होते है। एक में मित्र दूसरे सम होने से सिर्फ मित्र होते है। एक में सम और दूसरे में शत्रु है से केवल शत्रु एवं एक में शत्रु और दूसरे में मित्र होने से सम है

ग्रहों के आत्मादि कारक।

→ सूर्यादि 6 ग्रहों में जिस के अंश सब से अधिक हो वह आत्माकारक ग्रह होता है। यदि अंश बराबर होतो जिस के कला या विकला अधिक हो वही ग्रह आत्माकारक माना जाता है। बंधन कारागारादि व मोक्ष रिहाई के सम्बन्ध में आत्माकारक ग्रहों का विशेष महत्व होता है।
आत्मा कारक से कम अंश वाला अमात्य उस से कम अंश वाला भ्रातृ कारक उस से कम अंश वाला मातृ कारक इस से कम अंश वाला पुत्र कारक उस से कम अंश वाला ज्ञाति कारक तथा सब से कम अंश वाला ग्रह स्त्री या पति कारक होता है। इन में राहु केतु को समाविष्ट नहीं किया गया।

→ आत्मा → अमात्य → भ्रातृ → मातृ → पुत्र → ज्ञाति → स्त्री या पति कारक।

कारकांश कुण्डली

→ आत्माकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो उसी को लग्न मानकर जन्म कुण्डली के सभी ग्रहों को यथावत राशियों में स्थापित करदेने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

जैसे ग्रह स्पष्ट में अधिक अंश वाला गुरु ११·२८·१३·१०· सर्वाधिक अंश वाला होने से गुरु आत्माकारक होगा।

स्वांश कुण्डली

→ स्वांश कुण्डली का लग्न कारकांश कुण्डली जैसा ही होता है। परन्तु ग्रहों की स्थापना अपनी अपनी नवांश राशि अनुसार की जाती है। अर्थात स्वांश कुण्डली में ग्रहों की स्थिति जन्म लग्नस्थ ग्रहों जैसा न हो कर नवांश कुण्डली के ग्रहों जैसा होता है।

जैसे स्वांश कुण्डली में लग्न कारकांश कुण्डली की भान्ति लगाया गया है। तथा ग्रह स्थापना नवांश कुण्डली के समान है।

Scanned by TapScanner

→ जन्म कुण्डली में लग्नका स्वामी अर्थात् लग्नेश लग्न से जिस स्थान पर होगा उस से उतने ही स्थान पर स्थित राशि का पद लग्न होगा। जैसे किसी जातक का जन्म लग्न मकर है और लग्नेश शनि षष्ठ स्थान में स्थित है। तो वहां से उतने ही स्थान आगे अर्थात् एकादश भाव में स्थित राशि वृश्चिक को लग्न मानकर सभी ग्रहों को जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों के अनुसार ही स्थापना कर दी जायेगी। पद लग्न को आरूढ़ लग्न या विषम लग्न भी कहते है।

उपपद लग्न विचार

→ लग्न कुण्डली में व्ययेश द्वादशेष जिस स्थान में हो उस से उतने ही स्थान पर उप पद लग्न होता है।
जैसे जन्म कुण्डली में व्ययेश बृहस्पति द्वादश स्थान से दूसरे लग्न भाव में स्थित है। अत एव बृहस्पति से दूसरे भाव की राशि अर्थात् कुम्भ राशि का उपपद लग्न होगा। शेष ग्रह लग्नवत् ही स्थापित करेंगे।

मुन्था निकालने की विधि:

→ जन्म लग्न की संख्या में गत वर्ष की संख्या को जोड़कर जो योग फल आये उसे १२ का भाग दे कर जो संख्या शेष रहे उसी राशि अंक पर मुन्था स्थापित करना चाहिये। मुन्था जन्म से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

मुद्दा दशा निकालने की विधि:

→ गत वर्ष की संख्या में जन्म नक्षत्र जोड़कर उस में दो घटायें और ९ का भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिये शेष-१.२. ३.४.५.६.७.८.०. बचे तो क्रमश सूर्यादि नव ग्रह की मुद्दा दशा जाननी चाहिये।

दशा प्रमाण चक्र:

आ	चं	भौ	रा	जी	शं	बु	के	शु	ग्रहा
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२६	२१	२१	०	दिन

योगिनी मुद्दादशा बनाने की विधि :

→ जन्म नक्षत्र संख्या में गतवर्ष जोड़कर उस संख्या में ३ तीन जोड़ें और ८ से भाग देने पर जो संख्या शेष बचे क्रमश मंगला दि योगिनी जाने । १·२·३·४·५·६·७·० मं० पिं० धा० भ्रा० भ० उ० सि० संकटा जानना चाहिये।

दशा प्रमाण चक्र :

मं	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं	योगिनी
०	०	१	१	१	२	२	२	मास
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०	दिन

होरा ज्ञानम्

→ जो ग्रह जिस राशि का स्वामी है। वही उस का गृह है। विषम राशियों में पहली होरा सूर्य की और दूसरी चन्द्रमा की होती है। सम राशि में पहली होरा चन्द्रमा की और दूसरी सूर्य की होती है। चन्द्रमा के होरा का स्वामी पितर और सूर्य के होरा का स्वामी देवियाँ होती है। एक राशि का आधा १५ अंश का एक होरा होता है। अर्थात् १२ राशियों में २४ होरा होती है। इस लिये मेषादि राशियों की दो आवृत्ति होती है।

स्पष्टार्थ होरा चक्र :

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	स्पष्ट लग्न
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५ मेषादि
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

द्रेष्काण विचार :

→ एक राशि के तीसरे भाग का अर्थात् १० अंश का एक द्रेष्काण होता है। अर्थात् एक राशि में ३ द्रेष्काण होते है। १२ राशि में कुल ३६ द्रेष्काण होते है। विषम एवं सम राशि में पहले द्रेष्काण का स्वामी उसी राशि से पाँचवी राशि का स्वामी होता है। तीसरे द्रेष्काण का स्वामी इस राशि से नवी राशि का स्वामी होता है। और पहले द्रेष्काण के स्वामी नारद दूसरे द्रेष्काण के स्वामी अगस्ति और तीसरे के दुर्वासा होते है

०
१
२
३
४
५
६
७

Scanned by TapScanner